

මිනිසුන් ආගම වෙනුවට පර්යේෂණාත්මක විද්‍යාවට පරිවර්තනය කිරීම හුසුදුසු ඇයි?

आज (ब्रह्मांड के एक निर्माता के अस्तित्व के) कई खंडनकर्ता मानते हैं कि प्रकाश को समय में सीमित नहीं किया जा सकता है। लेकिन वे इस बात को स्वीकार नहीं करते कि सृष्टिकर्ता समय और स्थान के नियम के अधीन नहीं है। अर्थात् सृष्टिकर्ता हर चीज़ से पहले और हर चीज़ के बाद है, वह उच्च है और कोई भी सृष्टि उसे अपने घेरे में नहीं ले सकती।

आज बहुत-से लोगों का मानना है कि जुड़े हुए अणु जब अलग होते हैं, तो एक-दूसरे के साथ संवाद भी करते रहते हैं, परन्तु इस विचार को स्वीकार नहीं करते कि सृष्टिकर्ता अपने ज्ञान के द्वारा अपने बन्दे के साथ होता है, बंदा जहाँ भी जाए। वे अक्ल को देखे बिना उसपर विश्वास रखते हैं, परन्तु अल्लाह को देखे बिना उसपर विश्वास रखने से इंकार कर देते हैं।

बहुत-से लोग जन्नत एवं जहन्नम पर ईमान रखने से इंकार करते हैं और बहुत-सी दूसरी दुनियाओं को उन्हें देखे बिना मान लेते हैं। उन्हें भौतिक विज्ञान ने उन चीज़ों पर विश्वास करने के लिए कहा, जो अस्तित्व में भी नहीं हैं। उदाहरण स्वरूप मृचिका को ले लीचिए। उन्होंने उसे मान भी लिया और स्वीकार भी कर लिया। जबकि मृत्यु के समय, न तो भौतिकी से मनुष्यों को कोई लाभ होगा और न ही रसायन विज्ञान से। क्योंकि इन विज्ञानों ने उनसे अनस्तित्व का वादा किया है।

कोई व्यक्ति केवल इसलिए लेखक का इंकार नहीं कर सकता है कि उसने पुस्तक को जान लिया है। वे विकल्प नहीं हैं। विज्ञान ने ब्रह्मांड के नियमों की खोज की है, लेकिन उन्हें स्थापित नहीं किया है, बल्कि सृष्टिकर्ता ने उन्हें स्थापित किया है।

मोमिनों में से बहुत-से लोग भौतिकी और रसायन विज्ञान के उच्च श्रेणी में बैठे हुए हैं, मगर वे जानते हैं कि ब्रह्मांडीय क़ानूनों के पीछे महान सृष्टिकर्ता है। भौतिक विज्ञान ने, जिसपर भौतिकवादी लोग विश्वास रखते हैं, उन क़ानूनों की खोज की है, जिन्हें अल्लाह ने स्थापित किया है, विज्ञान ने इन क़ानूनों को पैदा नहीं किया है। वैज्ञानिकों को अल्लाह द्वारा ईजाद किए हुए इन क़ानूनों के बिना अध्ययन करने के लिए कुछ भी नहीं मिलेगा, जबकि ईमान मोमिन को दुनिया व आखिरत दोनों स्थानों में लाभ पहुंचाता है और यह होगा ब्रह्मांडीय क़ानूनों को सीख कर, जिससे सृष्टिकर्ता पर उनका ईमान और बढ़ जाता है।

जब किसी व्यक्ति को गंभीर फ्लू या तेज बुखार होता है, तो वह पीने के लिए कभी-कभी एक ग्लास पानी तक नहीं ले पाता, तो वह अपने सृष्टिकर्ता के साथ अपने रिश्ते की कैसे अनदेखी कर सकता है?

विज्ञान हमेशा बदलता रहता है। केवल विज्ञान पर पूर्ण ईमान अपने आप में एक समस्या है। क्योंकि नई खोजों के उद्भव पिछले सिद्धांतों को रद्द कर देता है। कुछ चीज़ें जिन्हें हम विज्ञान समझते हैं,

